बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 140 /2025) **Year: 7th**

जिला: बाँदा | **जारी करने की तिथि: 17.10.2025**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ कद्दू वर्गीय फसलों यथा लौकी, करेला, खीरा, तरोई, आदि, भिंडी, लोबिया, ग्वार, चौलाई की खड़ी फसलों में खरपतवार एवं मृदानमी प्रबंधन करें। ➢ बैगन, टमाटर, मिर्च की रोपाई करें। ➢ मिर्च, टमाटर, बैगन, भिंडी की खड़ी फसलों में सफेद मक्खी व अन्य चूसने वाले कीट आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। ➢ गोभी वर्गीय फसलों की रोपाई कर दें। ➢ फ्रांसबीन, पालक, मूली, मेथी, गाजर, शलजम, चुकंदर, लहसुन, सब्जी मटर तथा आलू की बुआई कर दें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	➢ धान पकने के 15 दिन पहले खेत से पानी निकाल दें। ➢ धान कटाई के उपरान्त उसे भली–भांति सुखाकर मिंजाई करें। ➢ रबी फसलों की बुवाई समय पर करना सुनिश्चित करें। ➢ खरीफ फसलों की कटाई के उपरान्त खेत अच्छी प्रकार तैयार करें। ➢ उत्तम प्रकार के प्रमाणित बीज का प्रयोग करें। ➢ फसलों की बुवाई उपयुक्त नमी की दशा में कतारों में करना अच्छा रहता है। ➢ खरपतवार की समस्या से बचने हेतु बुवाई के बाद 2–3 दिन के अन्दर फसल के अनुसार खरपतवारनाशी का प्रयोग करें। ➢ दलहनी फसल में पेंडीमेथालिन 3.3 किग्रा. क्यूजलोफोप इथाइल १ किग्रा व्यापारिक तत्व या मेट्रीव्युजिन ३५० ग्राम व्यापारिक तत्व का बोआई के तीन दिन के भीतर ४०० से ५०० लीटर पानी में मिलाकर कट नाजेल की मदद से छिड़काव करें । ➢ केवल पेंडीमेथालिन 3.3 किग्रा व्यापारिक तत्व का बोआई के तीन दिन के भीतर ४०० से ५०० लीटर पानी में मिलाकर कट नाजेल की मदद से छिड़काव किया जा सकता है । ➢ मटर की फसल में खरपतवार के व्यापक नियंत्रण हेतु ओक्सीफ्लोरफेन नामक खरपतवार नाशी की ४०० से ४५० ग्राम व्यापारिक तत्व का बोआई के तीन दिन के भीतर ४०० से ५०० लीटर पानी में मिलाकर कट नाजेल की मदद से छिड़काव किया जाना लाभदायक रहता है । ➢ कम नमी की दशा में बुवाई पूर्व सिंचाई करना उपयुक्त होगा। ➢ बुंदेलखंड की मृदाओं में कार्बनिक कार्बन व फास्फोरस की कमी है तथा इसका उचित प्रबंधन तिलहन व दलहन फसलों के लिए आवश्यक है।

		➢ गोबर की खाद का 5 टन हेक्टेयर अथवा 2 टन हेक्टेयर वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग बुआई से 10–20 दिन पहले करें।. ➢ चने के बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के पश्चात बुआई करें. 20:60:20 (की.ग्रा. हे) की दर से नत्रजन फास्फोरस व पोटाश का प्रयोग बुआई के समय करें। ➢ रबी फसलों के बुवाई हेतु प्रयोग किए जाने वाले उर्वरकों की व्यवस्था अबिलम्ब करलें। ➢ अगर किसान भाईयों ने मृदा परीक्षण कराया है तो मृदा परीक्षण रिपोर्ट को कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से समझ कर फसल में उसी अनुसार उर्वरकों का व्यवहार करें। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम एन पी के मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए। ➢ रबी की तिलहनी एवं दलहनी फसलों में गन्धक का प्रयोग क्रमषः 30 कि0ग्रा0 एवं 20 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से अवष्य करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्व प्रबन्धन करते रहे। ➢ दलहनी फसलों की बुवाई में आधारीय उर्वरक के रूप में 50 कि0ग्रा0 डी ए पी एवं 10 कि0ग्रा0 एम ओ पी का प्रति हेक्टेयर के दर से प्रयोग करना चाहिए। ➢ रबी फसलों के बुवाई हेतु प्रयोग किए जाने वाले उर्वरकों की व्यवस्था अबिलम्ब करलें। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम एन पी के मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए। ➢ रबी की तिलहनी एवं दलहनी फसलों में गन्धक का प्रयोग क्रमषः 30 कि0ग्रा0 एवं 20 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से अवष्य करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्व प्रबन्धन करते रहे। ➢ दलहनी फसलों की बुवाई में आधारीय उर्वरक के रूप में 50 कि0ग्रा0 डी ए पी एवं 10 कि0ग्रा0 एम ओ पी का प्रति हेक्टेयर के दर से प्रयोग करना चाहिए। ➢ सिंचित गेहूँ में पोषक तत्व की आवष्यकता सामान्यता 120 : 60 : 40 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर होती है। इस हेतु 130 कि0ग्रा0 डीएपी, 210 कि0ग्रा0 यूरिया एवं 67 कि0ग्रा0 एमओपी कि आवष्यकता होती है। डीएपी एवं एमओपी को आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग कर देना चाहिए।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ खुरपका–मुँहपका का टीका अवश्य लगवायें। ➢ बरसीम एवं रिजका के खेत की तैयारी एवं बुआई करें। बरसीम फसल से अधिक उपज व लम्बी अवधि तक (मध्य जून) तक हरा चारा प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों की बुआई करें। ➢ बरसीम की बुआई नये खेत में करनी हो तो बीज को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करने पर अधिक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।

		➢ स्वच्छ जल पशुओं को पिलायें तथा दुहान से पूर्व अयन को धोयें। ➢ बैल बनाने के लिए छ:मास की आयु होने पर बछड़े को बधिया करवायें एवं निम्न गुणवत्ता के पशुओं का बधियाकरण करवायें। ➢ पशु ब्याने के 1 – 2 घन्टे के अन्दर नवजात बछड़ों–बछि्ड़यों को खीस अवश्य पिलायें। नवजात बछड़ों– बछि्ड़यों को 10 – 15 दिन की आयु पर सींग रहित करवायें एवं उत्पन्न संततियों की उचित देखभाल करें।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ धान में सैनिक कीट के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। गंधी कीट के प्रकोप की दशा में फेनवेलरेट 0.04 प्रतिशत धूल 20–25 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से खेत में प्रयोग करना चाहिये। ➢ अरहर में चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई0सी0 1.5 लीटर प्रति हे0 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े में वातावरण में हल्की नमी और ठंडक होने से कुछ रोगों का संक्रमण बना रहता है। अतः किसान भाइयों को निम्नलिखित रोग प्रबंधन उपायों का पालन करना चाहिए — **धान (कटाई की अवस्था)** **संभावित रोगः** दाने का काला धब्बा, शीथ ब्लाइट के अवशेष प्रभाव **प्रबंधनः** फसल की कटाई पूर्ण परिपक्व अवस्था में करें। ➢ दानों को अच्छी धूप में सुखाएं, ताकि कवक संक्रमण न हो। ➢ कटाई से पहले रोगग्रस्त पौधों को खेत से हटा दें। ➢ भंडारण से पूर्व दानों की नमी 12% से कम रखें। **सोयाबीन (- कटाई की अवस्था)** **संभावित रोगः** चारकोल रॉट, दाने का फफूंदी जनित संक्रमण **प्रबंधनः** पूरी तरह सूखी व पकी फसल की ही कटाई करें। ➢ भंडारण से पहले दानों को सुखाकर साफ रखें। ➢ संक्रमित पौध अवशेषों को खेत में न छोड़ेंय उन्हें नष्ट करें। **अरहर** **संभावित रोगः** फाइटोप्थोरा ब्लाइट, अल्टरनेरिया पत्ती झुलसा, पीला मोजेक वायरस **प्रबंधनः** खेत में जलभराव न होने दें। ➢ ब्लाइट – मेटालाक्सिल + मैनकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर या क्लोरोथालोनिल 2.5 ग्राम प्रति लीटर की दर से धोल बनाकर छिड़काव करें। ➢ पीला मोजेक – सफेद मक्खी नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मिली प्रति लीटर या थायोमेथोक्साम 0.25 ग्राम प्रति लीटर की दर से धोल बनाकर छिड़काव करें। ➢ रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें। **चना (बुवाई की तैयारी)** **संभावित रोगः** बीजजनित फफूंद, कॉलर रॉट, डैम्पिंग–ऑफ

		प्रबंधनः बीजोपचार थायरम या कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम प्रति किलेग्राम बीज की दर से करें। ➢ जैविक उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा हरजियानम / 5–10 ग्राम प्रति किलेग्राम बीज की दर से करें। ➢ बुवाई से पहले खेत में पुरानी फसल के अवशेष न रखें। ➢ जल निकासी की उचित व्यवस्था रखें। **सरसों (अगेती फसल)** **संभावित रोगः** डैम्पिंग–ऑफ, अल्टरनेरिया लीफ ब्लाइट **प्रबंधनः** बीजोपचार अवश्य करेंः थायरम 2.5 ग्राम प्रति किग्रा बीज या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/किग्रा बींज ➢ पत्ती झुलसा – मैनकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर जल में घोल बनाकर छिड़काव करें। ➢ अत्यधिक सिंचाई न करें और जलभराव से बचें। **मटर व गेहूं (अगेती बोआई क्षेत्र)** **संभावित रोगः** बीजजनित फफूंद, जड़ गलन **प्रबंधनः** बीजोपचार करें थायरम + कार्बेन्डाजिम 2.5 ग्राम/किग्रा बींज ➢ जैविक उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा हरजियानम / 5–10 ग्राम प्रति किलेग्राम बीज की दर से करें। ➢ खेत में पहली सिंचाई हल्की करें ताकि डैम्पिंग–ऑफ न फैले। **सामान्य सुझावः** ➢ खरीफ फसलों के अवशेषों को नष्ट करें ताकि अगले मौसम में रोग न फैलें। ➢ भंडारण से पहले सभी दानों को धूप में अच्छी तरह सुखाएं। ➢ रबी फसलों की बोआई के लिए स्वस्थ, रोगमुक्त व प्रमाणित बीजों का प्रयोग करें। ➢ छिड़काव हमेशा सुबह या शाम को करें तथा दवाओं का मिश्रण निर्देशानुसार बनाएं।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ फल पौधों का रोपण इस माह के मध्य तक पूरा करें। ➢ वायु–अवरोधक बीजू पौधें इस माह में भी लगा सकते है। ➢ पहले से लगे वायु–अवरोधक वृक्षों की बाग में फैली शाखाओं को काट दें। ➢ मुलवृंत पौधों से फुटान को ध्यानपूर्वक हर 15 दिन बाद हटा दें। ➢ छोटे पौधों को सीधा रखने के लिए बंछटी का सहारा दें। ➢ फलदार पौधों के निचले हिस्से से निकले अनउत्तपादक सकर्स को हटा दें । कटे हिस्सों पर बोंडेक्स पेस्ट का लेप करें। ➢ फलदार पौधों के तने के चारो तरफ गहरी खुदाई करें ताकि खरपतवार अच्छी तरह से गहराई से निकल सके, परन्तु जड़ों को तथा तनें को कोई नुकसान न पहुंचें। ➢ किन्नौ पौध प्रर्वधन हेतु जट्टी–खट्टी की पौध तैयार करने के लिये बीज की बुआई की जा सकती है। ➢ चश्मा चढ़ाने के लिये उपयुक्त समय है । इसकी तैयारी पुर्ववतः रखें । चश्मा चढाने से पहले मुलवृंत को एकल तना बना दें तथा आस–पास की सारी टहनियों को काट दें। ➢ अक्टूबर माह के अंत में जिस मुलवृंत में सफेद धारियां नजर आये उसे प्रर्वधन के लिये चुने।

		➢ उत्तम किस्म के पौधे की आंख को प्रर्वधन के लिये चयन करें। ➢ मुलवृंत पर 1.5 सेमी. क्षितिज चीरा लगायें तथा एक चीरा 3 सेमी का ऊर्ध्वाधर बनाये इसमें चयन की हुई आंख को लगाकर सुतली या पोलीथीन की पट्टी से बांध दें। याद रखें कलिका बांधते समय न दबे। ➢ नये तथा पांच साल से कम आयु के पौधों में यदि चाहे तो दलहनी फसलों की बुवाई की जा सकती है। दलहनी फसलों के बुवाई करने से भूमि की उर्वरा शक्ति में बढ़ोत्तरी होती है। ➢ अक्टूबर माह में पपीते की रोपाई करें । 90 ग्राम यूरिया, 250 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट एवं 110 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश का मिश्रण मिलाकर पौधे के तने से दूर एक इंच गहरा गोलाकार गड्ढा बनाकर प्रत्येक पौधे को क्यारी में लगााने के बाद 2 महीने के अंतराल पर 6 बार प्रयोग करें। ➢ नींबू में कैंकर ग्रस्त टहनियां काट दें, कैंकर रोग के प्रकोप को रोकने के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लीन १० ग्राम एवं कॉपर ऑक्सी क्लोराइड २०० ग्राम को १०० लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। ➢ नींबू के विकसित बाग (४–५ वर्ष) में १०० किलोग्राम गोबर की खाद , 1.२५ किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट व ०.५० किलोग्राम मूरते ऑफ पोटाश एवं ०. ४५ किलोग्राम नत्रजन के साथ –साथ ०.२५ किलोग्राम जिंक सल्फेट का प्रयोग करें । ➢ अमरूद के एक वर्ष के पौधे के लिए प्रति वृक्ष ३० ग्राम नत्रजन जो बढ़कर क्रमशः ६ वर्ष या उससे अधिक उम्र के पौधे के लिए १८० ग्राम नत्रजन का प्रयोग करें । ➢ बेर के वृक्षों में नत्रजन उर्वरक की दूसरी मात्रा दें। यह मात्रा 50 ग्राम नत्रजन से 250 ग्राम नत्रजन प्रति पौधें के हिसाब से प्रथम वर्ष से पांचवें या अधिक वर्ष तक के पौधों में दें। ➢ आम के फलदार पौधों में यदि अब तक गुम्मा रोग ग्रस्त टहनियां न हटा दी हो तो इस माह अवश्य हटा दें। गुम्मा रोग की रोकथाम हेतु नैपथलीन एसिटिक एसिड का २०० पी. पी. एम. अथवा प्लेनोफिक्स ४ मिलीलीटर प्रति ६ लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें तथा इसमें बाविस्टीन 0.1 प्रतिशत भी मिला दें। ➢ आँवला में शूट गाल मेकर से ग्रस्त टहनियों को काटकर जला दें तथा शुष्क विगलन की रोकथाम के लिए ६ ग्राम बोरेक्स प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें । ➢ केले के बाग में प्रति पौधा ५५ ग्राम यूरिया, १५५ ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं २०० ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रयोग कर भूमि में मिला दें ।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ खेतों में कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की उचित देखभाल करते हुए आवश्यकतानुसार निराई गुड़ाई और सफाई करें ताकि पेड़ों में अच्छी वृद्धि हो सके। ➢ कृषि वानिकी प्रणाली के अंतर्गत लगाए गए इमारती लकड़ी की प्रजातियों जैसी सगवान, यूकेलिप्टस, अंजन, गम्हार, नीम, मालाबार नीम, कैजुअरिना की निचली शाखाओं को तेज आरी से काटें ताकि गाँठ मुक्त गुणवत्ता वाली लकड़ी प्राप्त हो और कृषि फसल पर छाया का प्रभाव कम किया जा सके। यह पेड़ों को तेज हवा के नुकसान से भी बचाता है।

		➢ वानिकी पौधशाला में पर्याप्त धूप बनाए रखने के लिए छायादार पेड़ों की निचली शाखाओं की छंटाई की जा सकती है। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय 6. डॉ मयंक दुबे	7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार